International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 6; November 2016; Page No. 12-13

नारी अस्मिता की पहचान "मीरा याज्ञिक की डायरी" के संदर्भ में

डॉ0 सूर्या बोस

प्रवक्ता, हिंदी विभाग, एम्0 ई0 एस0 अस्माबी कोलेज पी0 वेम्बलूर (पी0 ओ0) कोडूनगलूर, त्रिश्शूर (जिला), केरल, भारत।

सारांश

सामान्य नारी की मनस्थिति पर विचार करना जितना आसान समझते है; उतना आसान नहीं है। हरेक स्त्री की अपनी कहानी होती है, अपना अनुभव होता है। अनुभवों का आधार सामाजिक संरचना तथा स्थिति होते है। परिस्थितियाँ व्यक्ती की नियंता होती है। एकाकी स्त्रियों की पीड़ा क्या होती है, उनकी मानासिकता कैसी होती है उसका पहचान बिंदु भट्ट का लघु उपन्यास "मीरा याज्ञिक की डायरी" की मीरा, वृंदा, मीरा की माँ आदि की अवस्था से गुजरने के पश्चात हमें मालूम होता है।

मूल शब्द: नारी अस्मिता, मीरा याज्ञिक की डायरी

प्रस्तावना

साहित्य रचना में समय और काल ठहर जाता है। अपनी संगतता के साथ रुक जाता है, पढ़े जाते है पर पाठक की साँसों के साथ वह फिर जीवंत हो उठता है। महिला साहित्यकार सामाजिक सम्बन्ध, स्त्री दृपुरुष की मानसिकता, अपने या दूसरों के भोगे हुए यथार्थ आदि का प्रायः खुले आकाश में चित्रांकन नहीं कर सकती। खुल कर लिखने की शक्ति पाने के लिए सामाजिक और पारिवारिक तौर पर उन्हें कई संकट और असमंजस की मंजिल पार करना पड़ता है। बिंदु भट्ट ऐसी ही एक सशक्त लेखिका है, जिन्होंने समाज के सामने नारी की समस्याओं को खोलकर रहने का साहस जुटाया है।

सामान्य नारी की मनस्थिति पर विचार करना जितना आसान समझते है; उतना आसान नहीं है। हरेक स्त्री की अपनी कहानी होती है, अपना अनुभव होता है। अनुभवों का आधार सामाजिक संरचना तथा स्थिति होते है। परिस्थितियाँ व्यक्ती की नियंता होती है। एकाकी स्त्रियों की पीड़ा क्या होती है, उनकी मानासिकता कैसी होती है उसका पहचान बिंदु भट्ट का लघु उपन्यास "मीरा याज्ञिक की डायरी "की मीरा, वृंदा, मीरा की माँ आदि की अवस्था से गुजरने के पश्चात हमें मालूम होता है।

मीरा की जिन्दगी में किसी पुरुष को स्थान नहीं मिला था। उसकी माँ भी तलाकशुदा है। कोढ़ के सफेद दाग के कारण उसका शरीर विरूप है। इस चितकबरे स्पर्श को पार कर उसके हृदयगाथ सुंदरता को देखने वाला कोई मिलेगा या नहीं, इसकी चिंता मीरा को हमेशा सालती है। न्यू इयर की पार्टी में उसे दीर्ख केश स्पर्धा में प्रथम स्थान मिलता है। पुरस्कार लेती हुयी वह सोचती है – "मुझे इस आनितम्ब केश पाश में कौन बंधेगा? इस चितकबरे स्पर्श को लांघ कर कौन पहूंचेगा मुझ तक?"

हर स्त्री की इच्छा है माँ बनना इससे वंचित स्त्रियों की मानसिकता कैसी होगी? स्त्रीत्व की आरोपित आवश्यकताओं से वंचित स्त्री में हीं भाव जन्म लेता है। वह मन में पूर्ण व्यक्ति होने की चाह रखती है, एक ऐसा व्यक्ति एक ऐसी स्वतंत्र सत्ता, जिसका संसार में भविष्य हो। उसकी पसंद और परिस्थिति में मेल न होते तो वह अपने आप को विकृत एवं क्षत दृविक्षत पाती है। जब उन्हें विपरीत लिंगी व्यक्तियों के साथ संबंध स्थापित करने में कठिनाई होती है या मन चाहे पुरुष नहीं मिलते तो भी ऐसी स्थिति आती है। यहाँ भी स्थिति दूसरी नहीं है। वृंदा की प्रेमी कामाणी साहब अपनी पत्नी को छोड़ कर वृंदा से शादी करने के लिए तैयार है। वृंदा की जिंदगी सबसे बड़ी ख्वाहिश है माँ बनना, लेकिन दूसरी औरत की आंसुओं पर अपना परिवार खडा करना वह नहीं चाहती कामाणी साहब से सम्बन्ध न रख पाने की कुण्ठा मीरा के साथ लेस्बियन व्यवहार करके दूर करती है। इस बात का जिक्र वृंदा करती है तो मीरा के मन में कई प्रश्न एक साथ उमडती है। मीरा अपने आप से पूछती है– "यानी कि के0 एम्0 की गैर हाजिरी में मीरा .....चढ़ा हुआ ज्वार एकदम उतर गया, क्या वृंदा मुझे के0 एम्0 के बदले में स्वीकारती है? किन्तु यदि ऐसा है तो मेरी देह क्यों उसकी भावनाओं की प्रतिघोष करती है?"

समलिंगी कामुकतावाली स्त्रियाँ दो प्रकार की होती है। एक प्रकार की स्त्रियों में मर्दानापन रहता है। दुसरे प्रकार की स्त्रियाँ स्त्री सुलभ गुणों वाली होती है। मर्द्नापनवाली विपरीत लिंगी के साथ संबध किसी कारणवश स्थापित नहीं कर पाती। ऐसी स्त्रियाँ पुरुषों की नकल करती है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार, "अन्य स्त्रियों के प्रति स्त्री की काम भावना पुरुष के प्रति उसका विद्रोह है"। वह जिन मान्यताओं को लेकर आगे बढ़ती है, बाहर उसे अस्वीकार करती है, और कहती है कि वह पुरुष का विरोध कर रही है। समलिंगी कामुकता मानो स्त्री के लिए अपनी स्थिति से भागना है, बचना है या फिर उसे स्वीकार करना है। हरम अर्थात अंतपुर में रहने वाली स्त्रियों में प्रायः ऐसी स्थिती पायी जाती है। वह अपनी स्वतंत्रता और दैहिक निष्क्रियता में सामंजस्य स्थापित करती है। जो स्त्री अपनी स्त्रीत्व को स्त्री की बाहों में सौंप कर आनंद प्राप्त करना चाहती है, उसमें यह गर्व होता है कि वह किसी स्वामी की आज्ञा नहीं मानती वह समानता की अवस्था में प्रेम का आनंद पाती है। यह भावुक प्रेम का भी रूप ले सकता है। मीरा की ही हॉस्टल की दो लडकियां हिना और आभा आपस में शादी करती है। हाथ में रंग बिरंग चूड़ियाँ, गले में मंगलसूत्र और मांग में सिन्दूर के साथ खडी हीना को मीरा शादी अभिनंदन देती है; तो हीना का जवाब सुनकर मीरा सन्न रह जाती है। हीना ने कहा – "असलियत जानोगीई तो वापस ले लोगी मैं नें अपनी रूम मेट आभा के साथ शादी की है।"

स्त्री की शारीरिक रचना भी इस मानसिकता के लिए कारण बन सकती है। यदि किसी लड़की का शरीर बेडोल या कुरूप हो, या उसे अपने बारे में ऐसा भ्रम हो तो वह स्त्री के भाग्य को अस्वीकार कर देती है। लेकिन उसके मन में भी शारीरिक निकटता से जो आनंद मिलता है, उसकी चाह रहती है। हरेक स्त्री का स्त्री के प्रती आकर्षण के पीछे एक कारण जरूर होता है। यहाँ मीरा को कभी लगता है कि शायद कोढ़ के कारण उसका भूखा मन वृंदा की और

झुका होगा? लेकिन वह कभी अपने आप को किसी से कम महसूस नहीं करती आखिर मीरा इस निष्कर्ष पर पहूँचती है कि – "संभव है यह हमारे सम्बन्धों की प्रगाढ़ता का ही एक डायमेंशन हो। या डायवर्जन? "मीरा की राय में तीव्र भावेगों की अबिव्यक्ति के लिए शब्द को स्पर्श का साथ चाहिए। इसीलिए संबंधों में यह उलट फेर हो जाता है.। संबंधों की प्रगाढ़ता ही समलिंगी कामुकता की और व्यक्ति को आकर्षित करता है। हर स्त्री के प्रती वह भाव नहीं जागता। इसके उदाहरण के तौर पर मीरा की यह उक्ति स्मरणीय है – "यानी कि मैं और वृंदा लेस्बियन है? परन्तू जो अनुभूति मुझे वृंदा की उपस्थिति मात्र से होती है वह उत्तेजना उज्वला के अर्ध नग्न शरीर को स्पर्श करने पर भी नहीं होती। वर्षों तक मम्मी से छिपकर सोती रही हूँ, कभी ऐसा निहं लगा"।

समलिंगी कामुकता की स्थिति स्थायी नहीं है। इस अवस्था में प्रेम करना जरूर सीखती है। ऐसी लड़की आगे चलकर बहुत ही प्रेम करनेवाली और स्नेहमयी माँ बन सकती है। वृंदा भी माँ बनने की अपनी उत्कट इच्छा की पूर्ती के लिए डॉ0 अजित से शादी करती है।

एक उपेक्षिता नारी के जीवन से जब आशा सरिता सूख जाती है तब भी वह असीम सहनशक्ति से स्वयं को समझा लेती है कि कभी तो उसके जीवन में वसंत का आगमन होगा। स्त्री एक खुला हुआ गुलाब, जलपरी या भोर का तारा है, या फिर पुरुष के सम्मुख वह उरारा धरती है। प्रेम व्यक्ति को तंद्रा से जगाती है। प्रेम को नारी अपनी नियति मानती है, अपने अस्तित्व के औचित्य का एकमात्र कारण उसको प्रेम में सौन्दर्य, सुख, और ताजगी सब कुछ मिलता ही कवी उजास अगस्त्य का प्यार पाकर मीरा अपना गम भूल कर छकने लगती है। वह सोचती है–

"मेरा वर
सचमुच प्रेम व्यक्ति को बोल्ड बना देता है"

उजास एक विधुर है। उसकी पांच साल की बेटी है। मीरा उसके लिए मात्र सौंदर्य की मूर्ती है, हालांकि मीरा की शरीर में चितकबरे कोढ़ है। उजास, मीरा को अन्या की यथास्थिति में ही रखता है। उसको जिंदगी का 'चटपटा संवाद' सा मानता है। वह 'हलेबीड' की 'मदनिका' से मीरा की तुलना करते नहीं झूकता सबसे मुख्य बात तो यह है कि प्रत्येक दूसरा जो सीमाओं के अतिक्रमण के लिए प्रयत्नशील है, सर्वोपरिता की चाह रखता है। मगर अपनी ह्रदय की गहरायियों में बसे हुए अँधेरे की कैद में रहता है। अपनी हीनता को छुपाने के लिए वह स्त्री को पैरों तले कुचलकर रख देता है। मीरा के स्त्रीत्व को चूस कर छोड़ देने वाले उजास के प्रति उसका आत्मालाप है– "उसने मेरे जीवन सौन्दर्य को कुचल डाला, चींथ डाला धुआँधार कामनाओं के प्रप्पत के नीचे मेरे अस्तित्व का अस्वीकृत प्रारुप भीग कर लोथड़ा बन गया है"

पत्नी की आकस्मिक मृत्यु के कारण उसकी यौन वासनाएं दमित रहता है। स्त्री वह माद्धयम है जिसके द्वारा पुरुष अपने पौरुष स्थापित कर सकता हैः अपने को पुनः स्थापित कर सकता है। उजास मीरा के माध्यम से अपने इन मानसिक गतिविधियों से उतरने की कोशिश करता है। इस कोशिश में वह मीरा के साथ एक प्रकार से बलात्कार ही कर बैठता है। मीरा के शब्दों में– "..... ....मेरी नजर के सामने वह क्षण बलात्कार के अँधेरे में बदलता जा रहा ता और मैं उसमें अपना उजास खोजती रही।"

फ्रेंच लेखिका सीमओं द बोउवार के अनुसार– "प्रेम में औरत कुछ नहीं खोती, बल्कि पूरुष को और गहरायी से समझती है। "मीरा कई महीनों के बाद उस घटना के बारे में, उजास द्वारा इसी तरह छोड़ने के बारे में सोचती है – "आज विचार करून तो शायद ऐसा लगे कि वह काफी लम्बे अर्सों से भूखा था इसलिए भी स्वयं को रोक न पाया हो। यह भी हो कि इस चित कब्रे शरीर को वह सहन न कर सका हो।"

नारी ह्रदय के एक निराले पहलू का साक्षात्कार इस लघु उपन्यास के द्वारा होता है। नारीवाद के परवाह किये बिना समलिंगी भावुकता का पर्दाफाश लेखिका करती है। लेखिका के हिसाब से, एक विकल्प के रूप में नारी वासनापूर्ति के लिए नारी का सहारा लेती है; पुरुष के साहचर्य मिलने पर वह वापस लोक लीक पर आ भी जाती है। वृंदा ही नहीं मीरा भी इसका दृष्टांत है। नारी की सहनशक्ति का भी मिसाल है मीरा। कवी उजास द्वारा कुचले जाने पर भी आखिर वह उजास की नजरिये से घटनाओं को देख कर अपने आप पर काबू रखती है। लेकिन वह पूरी तरह प्रतिक्रियाहीन नहीं है। उजास ने एक बार मीरा के आनितम्ब सुन्दर केश की उपमा झुम्मर की तरह झूलते अमलतास के फूलों से किया था। वृंदा की भेजी जन्मदिन के कार्ड पर सूखा अमलतास का फूल देख कर वह अपनी सुन्दर लम्बी चोटी काट डालती है।

आखिर परिस्थितिवश घटित घटनाओं के बावजूद मीरा एक औसत भारतीय नारी साबित होती है। एक लघु उपन्यास में इतना विवादास्पद एवं सशक्त विषय का चित्रण करने में बिंदु भट्टजी बखूबी सक्षम हो गयी है।

संदर्भ सूचि

1. मीरा याज्ञिक की डयरी दृडॉ एबिंदु भट्ट